INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

हिन्दी जन संचार माध्यमः वैश्वीकरण के संबंध में

रवीन्द्र कुमार *1
*1 अनुसन्धित्सु (हिन्दी विभाग), लवली प्रोफैशनल यूनीवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.439644

सारांश

'जिज्ञासा' मानवीय प्रवृति का एक अहम व महत्त्वपूर्ण गुण है, जिसके आधार तहत मानव का आध्यात्मिक व भौतिक विकास संभव हो पाया है। आदि से आधुनिकता तक के सफर में हम जितना भी फर्क अथवा विकास या बदलाव महसूस करते आ रहे है और कदाचित् करते भी रहेंगे। उन सब के पीछे जिज्ञासु प्रवृति का विशेष स्थान रहा है। यह बात संसार के सभी क्षेत्रों के साथ–साथ भाषा पर भी लागू होती है। हिन्दी साहित्य के ध्यानहित यदि हम इस पर दृष्टिपात करें तो इसके लगभग 2000 वर्षों के इतिहास में हमें अनेक बदलाव नजर आते हैं। जन संचार के रूप में भाषा एक माध्यम का कार्य करती आ रही थी और बदस्तूर आज भी जारी है। किन्तु तकनीकि शिक्षा के कारण भाषा के साथ–साथ अनेक ऐसे तकनीकि उपकरण जुड गये हैं, जिनके अभाव में भाषा आज पंगु नजर आती है। 1980 से 2000 के बीच के समय के बदलाव ने तो स्मस्त संसार को हिला के रख दिया थ। जिसका असर भारत पर भी निश्चित था। इस असर ने भाषा को भी अपनी जकड़ में ले लिया है। आज इन उपकरणों व साधनों बिना भाषा निर्जीव है।उसका विकास, उसका फैलाव कदाचित् रुका हुआ सा लगता है। आज भाषा तकनीकि उपकरणों का इस्तेमाल कर रही हैं तथा उपकरण भाषा की मदद ले रहे हैं। इन दोनों के मेल से सूचनाएँ पलक झपकते ही दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने मे पहुँच जाती हैं। वैश्वीकरण के दौर ने इन दोनों को पूरक बना दिया है।

मुख्य शब्दः आधुनिकता, परम्परागत अवधारणा, सभ्यता, ई-जन संचार, भूमंडलीकरण, भाषा, साहित्य, वैब-जाल, वैश्विकता, जीवंतता

Cite This Article: रवीन्द्र कुमार. (2017). "हिन्दी जन संचार माध्यमः वैश्वीकरण के संबंध में." *International Journal of Research - Granthaalayah,* 5(3), 274-279. https://doi.org/10.5281/zenodo.439644.

1. भूमिका

'परिवर्तन' प्रकृति के इस शाश्वत नियमानुसार समस्त संसार में मौजूद जितनें भी विचार, परम्पराएं, प्रवृतियाँ, सभ्यतायें है या पदार्थवादी रूप में जितनी भी वस्तुएं है। उन सभी में समयानुसार कुछ न कुछ परिवर्तन निश्चित है। पाषाण युग से लेकर आधुनिक समाज की वैभवशाली जिन्दगी जीने की कला शायद यही बयान करती है और अगर साहित्य की बात करें तो डॉ रामस्वरूप चतुर्वेदी कहते हैं कि ''आधुनिक होना नवलेखन की पहली

शर्त है। इसके साथ ही साथ साहित्य की संबंध में एक पूर्णतःनवीन निश्चित तथा रचनातमक दृष्टिकोण होना दूसरी आवश्यक्ता है''(1) किन्तु पिछले तीन दशक से सम्पूर्ण विश्व के आधुनिक समाज को भी किसी ने अपनी चपेट में ले लिया है और उसके स्वरूप को बदल कर रख दिया है और उसका नाम है 'वैश्वीकरण'।

"Globalization is a process of interaction and integration among the people, companies, and governments of different nations, a process driven by international trade and investment and aided by information technology. This process has effects on the environment, on culture, on political systems, on economic development and prosperity, and on human physical well-being in societies around the world." (2)

हिन्दी भाषा में इसको 'भूमण्डलीकरण' के नाम जाना जाता है और अंग्रजी में इसे 'ग्लोबलाईजेशन' कहते है। इस शब्द ने सम्पूर्ण विश्व को अपने अंदर समाहित कर लिया है। असल में वैश्वीकरण बदलाव की वो आंधी है जिसके बहाव में समस्त संसार बहता चला जा रहा है।और अपने वजूद में बदलाव की प्रक्रिया को जारी रखे हुए है। अब प्रश्न यह उठता है कि यह शब्द आया कहां से और कैसे उसने यह कार्य किया। दरअसल ''शब्द वैश्वीकरण का उपयोग अर्थशास्त्रियों द्वारा 1980 से किया जाता रहा है। हालांकि 1960 के दशक में इसका उपयोग सामाजिक विज्ञान में किया जाता था, किन्तु 1980 के दशक के उत्तरार्द्ध और 1990 तक इसकी अवधारणा लोकप्रिय नही हुई'' (3)

असल में पश्चिम की ओर से आए इस शब्द का मुख्य अर्थ तो व्यापार का विश्वस्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया ही था किन्तु संचार माध्यमों की वजह से, प्रतिस्पर्धा की भावना की वजह से और लोगों में जागरूकता की वजह से आज इस प्रक्रिया ने एक सामान्य जीवन में इस्तेमान होने वाली प्रत्येक विचारधारा को, प्रत्येक घटना को, प्रत्येक वस्तु को बदल कर रख दिया है। जैसा कि आलोक जी कहतें है कि ''जनसंचार का उद्धेश्य है विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति को मनुष्य समाज मे, सांझा करना और फिर उन भावों एवं विचारों से लाभान्वित होना। संचार का अर्थ ही है फैलाव यानि विस्तार''(4) वैसे ''वैश्वीकरण के कई पहलु है जो दुनिया को कई प्रकार से प्रभावित करते है जैसेः– औद्यौगिक,, वित्तीय, आर्थिक, सामाजिक, सूचनात्मक, सांस्कृतिक इत्यादि स्तर पर। यह प्रक्रिया जब पूरे विश्व में चल रही है तो विकासशीलता से विकसत की ओर उड़ान भरता हुआ हमारा भारतवर्ष इससे अछूता कैसे रह सकना है। डा0 ऋषभ देव शर्मा जी ई–पत्रिका 'अभिव्यक्ति' में लिखते है कि ''भूमंडलीकरण ने विगत दो दशकों में भारत जैसे महादेश के समक्ष जो नई चुनौतियाँ खड़ी की हैं उनमें सूचना विस्फोट से उत्पन्न हुई अफरा–तफरी और उसे सम्भालने के लिए जन संचार माध्यमों के पल–प्रतिपल बदलते रूपों का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें संदेह नही कि वर्तमान संदर्भ में भूमंडलीकरण का अर्थ व्यापक तौर पर बाज़ारीकरण है।'' (5)

आधुनिक समाज में जब हम हिन्दी साहित्य के संदर्भ में बात करतें हैं तो उस पर भी वैश्वीकरण का असर नजर आता है। आज साहित्य लेखन की विद्यायों में यात्रा वृतांत, संस्मरण, रिपोर्ताज, रेखाचित्र इत्यादि ऐसे अनेकों रूप पैदा हो गये है जिन्होने लेखन कला को नये आयाम दिये है। अगर हम हिन्दी जनसंचार माध्यमों की बात करें तो इनका तो एक दम नया स्वरूप हमारे समक्ष उपस्थित हुआ है। हिन्दी जनसंचार माध्यमों में हम हिन्दी पत्रकारिता, हिन्दी सिनेमा, हिन्दी रेडियो, हिन्दी वैब दुनिया, हिन्दी न्यूज़ चैनल, हिन्दी विज्ञापन, हिन्दी ई–पत्रिका, हिन्दी परचे, हिन्दी किताबें, हिन्दी पोस्टर तथा स्टिकर्स, हिन्दी बैनर्स, हिन्दी विज्ञापन, कम्प्यूटर तथा मोबाईल इत्यादि को शामिल करतें है। अगर सम्पूर्ण विश्व में नज़र दौड़ा कर देखें तो ज्ञात होता है कि जनसंचार माध्यमों ने वैश्वीकरण को ऐसी हवा दी कि यह जंगल में आग की तरह फैल गई।

''सूचना संचार प्रणाली किसी भी व्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अंग्रेज रहे हों या हिटलर जैसे तानाशाह, सबको यह मालूम था कि सैन्य शक्ति के अलावा असली सत्ता जनसंचार में निहित होती है। आज भी भूमंडलीकरण की व्यवस्था की जान इसी में बसती है। दूसरी तरफ़ समाज के दर्पण के रूप में साहित्य भी तो संचार माध्यम ही है जो सूचनाओं का व्यापक संप्रेषण करता है। साहित्य की तुलना में संचार माध्यमों का ताना.–बाना अधिक जटिल और व्यापक है क्योंकि वे तुरंत और दूरगामी असर करते है। भूमण्डलीकरण ने उन्हें अनेक चैनल ही उपलब्ध नही कराए है, बल्कि इंटरनेट और वेबसाइट के रूप में अंतर्राष्ट्रीय के नए अस्त्र–शस्त्र भी मुहैया करवाये है। परिणामस्वरूप संचार माध्यमों की त्वरा के अनुरूप भाषा में भी नए शब्दों, वाक्यों, अभिव्यक्तियों और वाक्य संयोजन की विधियों का समावेश हुआ है।'' (6) कहने का अर्थ यह कि हिन्दी साहित्य भी हिन्दी जनसंचार माध्यमों की तरह ही समाज की यर्थाथता का चित्रण जन जन तक पहुंचाने का अप्रत्यक्ष रूप में एक सशक्त साधन है।

हिन्दी पत्रकारिकता का अगर वैश्विक संदर्भ में जिक्र करें तो इसके पुरातन रूप से लेकर आधुनिक स्तर तक के सफर में इसका एक नया रूप निखर कर सामने आया है। हिन्दी पत्रकारिता अपने जन्म के संधर्षशील समय और सीमित साधनों से गुजरती हुई आज वैश्विक स्तर को छू रही है। ''यहाँ 1907 में इलाहाबाद से प्रकाशित उर्दू साप्ताहिक 'स्वराज' का उल्लेख प्रासंगिक होगा, जो कुल ढाई वर्ष तक प्रकाशित हुआ। 75 अंक निकले। आठ सम्पादक हुए और उन सभी को कुल मिलाकर एक सौ पच्चीस वर्ष की कैद और काला पानी की सजा हुई। जौ की दो सूखी रोटी, एक गिलास पानी और हमेशा जेल जाने की तैयारी का आभास सम्पादक पद की योग्यता के रूप में विज्ञापित किया जाता था, फिर भी 'स्वराज' के लिए सम्पादकों का टोटा नही पड़ा।''(7) ''यह कहना असंगत न होगा कि अन्याय और अत्याचार का प्रतिकार करने का मादा भारतीय समाज में काफी हद तक पत्रकारिता ने पैदा किया''(8)

आज के दौर में यह सब कुछ गायब है। आज पत्रकारिता सरकार और प्रशासन को अपने सिंहासन से हिला देने में सक्षम हैं। कहने का भाव कि आज वह सरकार व प्रशासन के पल पल के किए कार्यो का लेखा–जोखा जन साधरण के समक्ष प्रस्तुत करती है। आज सम्पूर्ण भारत में हिन्दी समाचार पत्रों की गिनती लगातार बढती जा रही है। ''भारत के समाचार पत्रों की पंजीयक की 2001 ई में जारी रिपोर्ट के मुताबिक 2000 ई में पंजीकृत समाचार पत्रों की संख्या 49145 तक पहुँच गई। 2000 ई. मे प्रकाशित पत्रों में सबसे ज्यादा 19685 हिन्दी के थे।''(9) इन्टरनेट के आग्मन से इस कार्य में और भी उछाल आया है। आज हर समाचार पत्र अपने नाम के आगे 'ई' शब्द लगाकर चौबीसों घण्टों जन साधारण के आगे प्रस्तुत है। बटन दबाते ही किन्हीं भी दिनों का पुराना समाचार पत्र निकाल कर पढा जा सकता है। दुनिया के किसी भी कोने में कोई भी घटना घटित हुई हो। हाथों हाथ आप तक खबर पहुँच जाएगी। घर पर बैठे आप अपने कम्प्यूटर से सारा आँखों देखा हाल जान सकते हो। वैश्वीकरण के दौर में इसे ई–पत्रिका का नाम दिया गया है। इससे अप्रत्यक्ष रूप में पर्यावरण की सुरक्षा का दायित्व भी निभाया जा रहा है क्योंकि इससे कागज़ की बचत होती है जिससे पेड़ कटने से बच जाते है और आजकल तो यह सुविघा मोबाईल पर भी उपलब्ध है। आप अपने कम्प्यूटर के सामने केवल एक जगह बैठ कर सूचना प्राप्त करने के लिए बाध्य नही है, आप चलते फिरते कहीं भी जानकारी प्राप्त कर सकतें है और पल्क झपकते ही एक संदेश के जरीए वह जानकारी अपने मित्रों, रिश्तेदारों से शेयर कर सकतें है।

''हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता को आज के दौर में जो गौरव प्राप्त हुआ है वो वेब मीडिया के बिना असंभव ही था। ये वेब मीडिया का ही प्रभाव है कि अमेरिका, यूरोप और रूस जैसे महाद्वीपों में हिन्दी गोष्ठियां और साहित्य पुरुस्कार आयोजित किये जाते है, हिन्दी समाचार पत्र प्रकाश्ति किये जा रहें है और हिन्दी सम्मेलन रखे जाते है। आगरा शहर के होनहार युवा अनुज अग्रवाल पिछले दो वर्षों से ऑस्ट्रेलिया मे 'हिन्दी गा ौरव' नाम का समाचार पत्र सफलता पूर्वक सम्पादित कर रहें है जो हिन्दी और हिन्दी प्रेमियों के लिए वाकई गौरव की बात है।''(10द्ध हिन्दी सिनेमा भी साधारण जन जीवन से संबंधित घटनायों के यथार्थ

चित्रण का एक महत्त्वपूर्ण आईना रहा है । भूमण्डीकरण का इस पक्ष पर बहुत ज्यादा असर पडा है। पिछले दो दशकों से फिल्मों के प्रर्दशन में नाटकीय ढंग से बदलाव आया है उनमें भावनाओं के प्रदर्शन की जगह यंत्रीकरण ने ले ली है। नई टैक्नोलोजी की वजह से आज एक ही थियेटर में चार चार फिल्में प्रस्तुत की जा रही है । उन्में ऐसे दृश्य फिल्माये जा रहे है कि लगता ही नही कि यह एक्टिंग है कि असली हालात है। 'ऐनीमेशन' (जीवंतता) ने तो इसमें यंत्रीकरण व कलात्मकता के नए मिश्रण को प्रस्तुत किया हैं। 'रोबोट, डॉन, कृष, अवतार इत्यादि और न जाने कितनी ही ऐसी और भी फिल्में है, जिन्हें देख कर ऐसा लगता है कि वैश्वीकरण का सारा असर इधर ही जमा है। किन्तु दूसरी ओर हिन्दी सिनेमा ने सम्पूर्ण विश्व में अपनी धाक जमायी हैं। वह हॉलीवुड तक अपना असर छोड़ता जा रहा है। ऑस्कर तक अपनी बांहे फैलाये खडा है। विदेशी लोग अब हिन्दी कहानी के आधार पर अंग्रजी में फिल्में बनाने को ललायित है । पहले फिल्में बहुत ही धीमी गति से बनती थी किन्तु आज वह अपनी पूर्णतःउडान पर है। पहले फिल्मों में काम करना एक सभ्यक परिवार के लिए एक तौहीन समझा जाता था किन्तु आज हिन्दी सिनेमा एक उद्योग के रूप में भारतीय अर्थ व्यवस्था को सहारा लगाये खड़ा है ।

संचार साधनों में आज के दौर में विज्ञापनों ने तो ऐसी धूम मचा रखी है कि प्रत्येक समाचार पत्र में, टी.वी. चैनलों पर, इंटरनेट पर, पत्र–पत्रिकायों के कोने कोने में इन्होनें अपना घर बना रखा है और वह भी ऐसी विभिन्नता के साथ कि आप चाह कर भी अपना ध्यान इनसे हटा नही सकते। वैश्वीकरण के दौर और संचार माध्यमों में अत्यधिक वृद्धि के कारण इसनें दिन दुगनी और रात चौगुनी तरक्की की है।

प्रतिस्पर्धा के इस दौर में हम धर बैठे चाहे जितने भी ताकतवर हों, उसे कोई स्वीकार नही करता। अपना दम दिखाने के लिए हमें मैदान में उतरना पड़ता है। यही बात अगर हम उत्पादक की दृष्टि से देखें तो हमें अपनें उत्पाद की खपत के लिए विज्ञापनों का सहारा लेना पडता है। वैश्विक संदर्भ में आज विज्ञापन प्रस्तुति एक उद्योग के रूप में कार्य कर रहा है। समाचार पत्रों और टी.वी. चैनलों के लिए तो यह वरदान सिद्ध हो रहा है। वैसे यह एक ऐसा माध्यम है जिससे मनोरंजन और उत्पादन का प्रसार एक साथ होते हैं।''विज्ञापन शब्द 'वि' और 'ज्ञापन' शब्दों से मिलकर बना है। 'वि' से तात्पर्य है – विशेष तथा 'ज्ञापन' से तात्पर्य है ज्ञान कराना या सूचना प्रदान करना। इस प्रकार विज्ञापन का अर्थ हुआ– किसी तथ्य या बात की विशेष जानकारी अथवा सूचना प्रदान करवाना।'' (11) सभी विज्ञापन केवल अपने उत्पादों की बिक्री के लिए ही तैयार नही किए जाते बल्कि वैश्विक स्तर को छूते हुए मानव कल्याण हेतु सरकारी या अर्ध सरकारी अथवा समाज सेवी संस्थायों द्वारा जनहित में भी जारी किए जाते है। आज इन विज्ञापनों की प्रस्तुतिकरण में भी बदलाव आ गया है। इन्होनें एक डाक्यूमैन्टरी फिल्म का रूप भी अख्तियार कर लिया है। यह संदेश भेजने व अनभिज्ञता के प्रति जागरूक कराने का एक आकर्षक साधन है। विज्ञान और टैक्नोलॉजी ने इसके रूप सज्जा और प्रस्तुतिकरण को इस प्रकार बदल दिया है कि प्रत्येक व्यक्ति इनकी ओर खींचा चला आता है।

आज विज्ञापन समाचार पत्रों व टी. वी. चैनलों के बाहर निकल कर भी अपना बसेरा बनाये हुए है। यह सडकों के किनारों, पुल के उपर, होटलों में अथवा बडी बडी बिल्डिंगों इत्यादि के उपर बड़े बड़े बैननो के रूप में हमें दिखाई दे जाते है। ''आज विज्ञापन हमारे जीवन की दिनचर्या का एक अभिन्न अंग बन गया है। व्यावसाय में उत्तरोतर विकास, अपने उत्पाद मांग को बाजार मे बानाए रखने, नई वस्तु का परिचय जन–मानय तक प्रचलित करने, विक्रय में वृद्धि करने तथा अपने प्रतिष्ठान की प्रतिष्ठा बनाए रखने हेतु विज्ञापन की आवश्यकता अनुभव की जाती है।''(12द्ध वैश्विक स्तर से आज विज्ञापनों के सैंकडों प्रकार बन गए है। सामाजिक जीवन के प्रत्येक पहलु को आधार बना आज विभिन्न प्रकार के विज्ञापन बाजार की शोभा बने हुए है।

टैलीविजन और रेडियो के आने से पहले जनसंचार माध्यमों में पत्रकारिता ने अपनें अच्छे पैर जमाए हुए थे, किन्तु टैलीविजन और रेडियो के आविष्कार ने तो संचार माध्यमों में एक क्रान्ति सी ला खडी कर दी। इन दोनों उत्पादों ने तो सूचनाओं के आदान प्रदान में विश्व स्तरीय भूमिका निभाई। सम्पूर्ण भारतवर्ष के गरीब से गरीब तब्के के लोगों तक भी रेडियों ने अपनी पहुंच बना ली थी, जब्कि टी़ वी़ केवल शहरों तक ही सीमित था। हिन्दी फिल्मों में भी समय समय पर रेडियो ने अपना जल्वा बिखेरा। हाल में ही बनी एक हिन्दी फिल्म 'लगे रहो मुन्ना भाई' में अभिनेत्री विद्या बालन और अभिनेता संजय दत्त को रेडियो के जरीए लोगो का मनोरंजन और उनकी मुश्किलो को दूर करते हुए दिखाया गया है। 'सर्व शिक्षा अभियान' की ओर से सम्पूर्ण भारत में प्राईमरी शिक्षा की नींव मजबूत करने हेतु रेडियो के माध्यम से एक प्रोग्राम चलाया गया था। जिसमें बच्चो से सम्बन्धित कहानियां, चुटकुले, पहेलियां इत्यादि प्रस्तुत किए जाते थे। पंजाब में यह स्कीम 'पढो पंजाब' के नाम से चलायी गयी थी। शिक्षा के क्षेत्र में ऐसा कार्य सराहनीय है।

यह वैश्वीकरण का ही असर है कि मौजूदा सरकार में हमारे प्रधानमंत्री जी ने पांच सितम्बर को 'अध्यापक दिवस' के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण भारतवर्ष में दूरदर्शन के माध्यम से अपना कार्यक्रम पेश किया और भारतीय जनता ने इसमें भरपूर सहयोग दिया। उसके कुछ समय पश्चात् अपनी 'मन की बात' कहने के लिए उन्होनें रेडियो को ही अपनाया ताकि भारत देश का कोई भी नागरिक ऐसा न बचे जहां तक उनके मन की बात न पहुँच सके। ''आज दूरदर्शन के युग में आकाशवाणी का महत्त्व कम अवश्य हो गया है किंतु फिर भी जहाँ दूरदर्शन की पहुँच नही हुई है, वहाँ आज भी रेडियो का महत्त्व है।''(13)

टैलीविजन और रेडियो पर प्रसारित होने वाले प्रोग्रामों की वजह से लोगों के काम करने के तरीको में, उनके विचारों में और उनके प्रेरित होने की प्रक्रिया में बड़ी तेजी से बदलाव आया है। किसानो के लिए तो रेडियो पर कोई न कोई प्रोग्राम चलता ही रहता है। यू.जी,सी, की ओर से शिक्षा से संबंधित अनेको प्रोग्राम टी,वी, पर प्रसारित होते रहते है। कुल मिलाकर टैलीविजन पर शैक्षिक प्रसारण, मनोरंजन कार्यक्रम, खेल प्रसारण, सूचना केन्द्रित कार्यक्रम, विज्ञापन व अन्य प्रोग्राम प्रसारित होते रहते है। वैश्विक स्तर को ध्यान मे रखे तो आज के समय करीबन 300 से ज्यादा तो चैनल ही है जो दिन रात मनोरंजन और सूचनाओं के प्रसारण में लगे रहते है।

इंटरनेट, मोबाइल, टैलीफोन, कम्प्यूटर इत्यादि उपकर्णों के बिना तो वैश्वीकरण की कल्पना भी नही की जा सकती। तात्पर्य यह कि वैश्वीकरण को बढावा देने के लिए इन सभी उत्पादों का अहम योगदान है "Globalisation from the point of view of ICT engineers (though it may be wrong to restrict them to these dimensions) means connecting the world through technological means whether it is telephone, mobile phone, Internet or satellite television. It is in fact these technological developments that have enabled the concept of globalisation to develop faster and wider." (14) इंटरनेट का तो अर्थ ही यह है कि सूचनायों के आदान प्रदान से सम्पूर्ण विश्व के देशों को एक दूसरे के साथ जोड़ना। उसमें मोबाईल व कम्प्यूटर के जुड़ने से तो सूचनायों के प्रसार में एक आंधी सी ही आ गई है। मानवीय मस्तिष्क ने अपने मन मे उपजी इच्छाओं के अनुसार सॉफटवेयर तैयार किए और उनको इन उपकरणों के जरीए चलाया। जिस वजह से यह हमारी जिन्दगी का एक अहम हिस्सा बन गए, हमारी जरूरत बन गये है। असर यह हुआ कि उसने एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक, एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक और एक देश से दूसरे देश तक अपनी पहुँच बना ली और व्यापार तथा सूचनाओं के आदान प्रदान के जरीए से एक दूसरे से जुड़ते गये और सम्पूर्ण विश्व को एक गाँव बना डाला।

हिन्दी किताबें, हिन्दी पत्रिकाएं, हिन्दी ई–पत्रिकाएं, शोध पत्रिकाएं हिन्दी से और हिन्दी में अनुवादित पुस्तके वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी भाषा और संचार माध्यमों के विकास में एक बढता कदम है जिन्होनें भारत के लोगों को एक सूत्र में पिरोने के पश्वात विदेशों में भी अमने धाक जमाई है। भारतीय लोग अब विदेशी किताबों का हिन्दी में अनुवाद और विदेशी लोग अपने देश में हिन्दी पढ़ने लगे है। वह हिन्दी भाषा को

सम्प्रेषण का माध्यम बनाने लगे है। मोबाइल में भी हिन्दी भाषा टाईप करने के लिए सॉफटवेयर तैयार हो चुके है। कम्प्यूटर के लिए भी हिन्दी के कीबोर्ड तैयार हो चुके है। इंटरनेट पर ढेर सारी हिन्दी किताबें डाउनलोड हो चुकी है और रोजाना हो रही है।

सारांश यह है कि वैश्वीकरण के चक्रव्यूह ने सम्पूर्ण विश्व को अपने कब्जें में ले लिया है और सारा संसार एक परिवार के रूप में व्यावहार करने लग गया है। तरंगों की तरह सूचनाएं इधर से उधर घूमती फिर रही है जिस वजह से हिन्दी जन संचार माध्यमों में बड़ी तेजी से बदलाव आया है। सूचनायों की तत्कालीन प्राप्ति से मनुष्य के विचारों और कार्य करने के तरीकों में बड़ा साकारात्मक दृष्टिकोण देखने का मिल रहा है। जिस कारण जहाँ पर परम्परागत रूढियां टूटने के कगार पर है तो वहीं नई कोपलें भी फूटने को ललायित है। क्योंकि आज लगभग सभी व्यवसाय सूचनायों के प्रसारण पर अपना रूख तय करतें है जैसे कि हमारा स्टॉक एक्सचैंज सरकार की नीतियों के अनूसार ही प्रतिदिन बढता घटता रहता है। तो आज हिन्दी जन संचार माध्यम ही भारतीय अर्थ व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है और वैश्वीकरण के बदलते माहोल में पला बड़ा है। जिस वजह से विश्व की इस मैराथन मे हम अपने सशक्त हिन्दी जन संचार माध्यमों की वजह से अपनी दौड़ और पकड़ उस पर बनाए हुए है।

पाद टिप्पणियाँ

1. चतुर्वेदी डॉ रामस्वरूप, समकालीन हिन्दी साहित्य विविध परिदृश्य, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली। पृष्ठ–22ए23
2- http://www.globalization101.org/what-is-globalization/
3- *Armageddon* का युद्ध, अक्टूबर, 1897 पृष्ठ 365 -370 , http://hi.wikipedia.org/wikioS”ohdj.k
4. आलोक डॉ. ठाकुरदत शर्मा, हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2009, पृष्ठ–33
5- http://www.abhivyakti-hindi.org/snibandh/2007/bhumandalikaran.htm
6- http://www.abhivyakti-hindi.org/snibandh/2007/bhumandalikaran.htm
7. श्रीधर विजय दत्त, भारतीय पत्रकारिता कोश, खण्ड दो,वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली। पृष्ठ–489
8. श्रीधर विजय दत्त, भारतीय पत्रकारिता कोश, खण्ड दो,वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली। पृष्ठ–487
9. चौबे कृपाशंकर, पत्रकारिता के उत्तर–आधुनिक चरण, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली,2005, पृष्ठ–13
10- http://sapnamanglik.jagranjunction.com/2012/07/14/web-media-aur-hindi-ka-vaishvikaran/
11. सूद डॉ. हरमोहन लाल , डॉ. देवेन्द्र कुमार, हिन्दी भाषा प्रयोजनमूलकता एवं आयाम, वागीश प्रकाशन, जालंधर–2010, पृष्ठ– 177
12. सूद डॉ. हरमोहन लाल , डॉ. देवेन्द्र कुमार, हिन्दी भाषा प्रयोजनमूलकता एवं आयाम, वागीश प्रकाशन, जालंधर–2010, पृष्ठ–180
13. सूद डॉ. हरमोहन लाल , डॉ. देवेन्द्र कुमार, हिन्दी भाषा प्रयोजनमूलकता एवं आयाम, वागीश प्रकाशन, जालंधर–2010, पृष्ठ–170
14- http://biblioteca.clacso.edu.ar/ar/libros/raec/ethicomp5/docs/htm_papers/4Begg,%20Mohamed%20M.htm

*Corresponding author.
E-mail address: ravinder123kumar@yahoo.in